शिक्षित महिलाओं में बेरोजगारी

शम्स आमना महबूब*

यद्यपि बेरोजगारी का सम्बन्ध आर्थिक पक्ष से है परन्तु यह मुख्य रूप से एक सामाजिक समस्या है। क्योंकि इसका परिणाम आर्थिक जीवन की अपेक्षा सामाजिक जीवन को कहीं अधिक प्रभावित करता है। सामाजिक समस्या के बारे में डब्ल्यू वेलेस वीवर ने बताया है कि सामाजिक समस्याएं ऐसी दशा है जो चिन्ता, तनाव, संघर्ष या नैराश्य उत्पन्न करती है और आवश्यकता की पूर्ति में बाधा डालती है। इसी प्रकार राव तथा सैल्जनिक में सामाजिक समस्या को मानवीय संबंधों से संबंधित एक समस्या माना है जो समाज के लिए गंभीर खतरा पैदा करती है अथवा जो व्यक्तियों को महत्वपूर्ण आकांक्षाओं की प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न करती है– क्लेरेंस माशकेस के मतानुसार सामाजिक समस्या का तात्पर्य किसी ऐसी सामाजिक परिस्थिति से है जो एक समाज में काफी संख्या में योग्य अवलोकनकर्ताओं के ध्यान को आकर्षित करती है और सामाजिक अर्थात् सामूहिक किसी एक अथवा दूसरे किस्म की क्रिया के द्वारा पुनः सामंजस्य या हल हेतु उन्हें आग्रह करती है। इस प्रकार सामाजिक समस्या में तीन तत्व पाये जाते हैं। प्रथम सामाजिक समस्या एक ऐसी दशा है जिसमें सापेक्ष रूप से अत्यधिक व्यक्ति उलझे रहते हैं इसकी निश्चित मात्रा की कोई सीमा नहीं आंकी जाती है। द्वितीय इस दशा को अधिकांश लोगों की मूल्य व्यवस्था की दृष्टि से समाज कल्याण के लिए खतरा समझा जाता है। तृतीय यह मानकर चला जाता है कि सामूहिक प्रयत्न के द्वारा इन दशाओं को नियंत्रित किया जा सकता है।

यदि उपर्युक्त तथ्यों की कसौटी पर शिक्षित महिलाओं में व्याप्त बेरोजगारी को कसें तो स्पष्ट होता है कि एक ओर बेरोजगारी के फलस्वरूप अपराध मानसिक तनाव, निर्धनता, दुर्व्यसन, संघर्षो की प्रवृत्ति से वैयक्तिक विघटन होता है तो दूसरी ओर यही समस्या बाद में सामाजिक विघटन को प्रोत्साहित करती है। एक बेरोजगार व्यक्ति जब अपने और परिवार के दूसरे सदस्यों की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर पाती है तो वह समाज के प्रति हिंसक बन जाता है। यह स्थिति वतन और क्रान्ति के लिए भी उत्तरदायी होता है। अर्थात् महिलाओं में व्याप्त बेरोजगारी की दशा आज हमारी परम्परागत मूल्यों पर आधारित परिवार तथा समाज के लिए खतरा उत्पन्न बन गयी है। यदि इसके सुधार के लिए ठोस कदम नहीं उठाये गये तो गंभीर परिणाम सामने आ सकती है। रीता सिन्हा की मान्यता है कि जिस प्रकार स्त्री शिक्षा का विकास हो रहा है। मंहगाई बढ़ रही है, दहेज की समस्या गंभीर होती जा रही है, इन परिस्थितियों के कारण महिलाओं के द्वारा नौकरी करने की प्रवृति में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। चूंकि वे कई कारणों से बेरोजगारी की दशा से गुजर रही है तो इसका प्रभाव समाज तथा परिवार पर अवश्य पड़ेगा। चूंकि बेकारी की समस्या का संबंध मानसिक विधान से भी है इसलिए यह अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म दे सकता है।

1.मानसिक असंतुलन :– जब महिला शिक्षित होकर किसी व्यवसाय में जाना चाहती है तो उन्हें इसकी आज्ञा नहीं दी जाती। ऐसी स्थिति में वह अपने को उपेक्षित अनुभव करने लगती है। फलस्वरूप उनके द्वारा प्राप्त 'शिक्षा' एक बोझ बन कर रहने लगती है। वह अपने ऐसी स्थिति में विचार नहीं कर पाती कि उन्हें क्या करनी चाहिये। सारी बाधाओं पारिवारिक परम्पराओं, मान्यताओं को तोड़कर नौकरी में जाएं या अपनी महत्वाकांक्षाओं को इनके आगे बलि चढ़ा दें। ऐसी परिस्थिति में वह अपनी मानसिक सन्तुलन खो देती है। उनका स्वभाव चिड़चिड़ापन हो जाता है। परिवार के अन्य सदस्यों के साथ–साथ बात–बात पर चिढ़ जाती हैं। कपूर ने इसके बारे में लिखी है कि आज महिलाएं मात्र ज्ञान के लिए नहीं शिक्षा अर्जित करती है बल्कि वे चाहती हैं कि आत्मनिर्भर बने एवं सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति अपनी स्वेच्छा से करें। चूंकि ये महत्वाकांक्षा सिमट कर रह जाती है इसलिए उनका मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है। हमेशा परिवार में मानसिक संघर्ष की स्थिति बनी रहती है जिससे परिवार पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

2.निराशा एवं हीनता का विकास :– चूंकि उनकी महत्वाकांक्षा सिमट कर रह जाती है। अतः उनमें निराशा एवं हीनता की भावना का जन्म होता है एवं काम के प्रति उसकी रूचि समाप्त हो जाती है जो देश के विकास में बाधक बनती है।

3.मेधा शक्ति का कुंठित होना :– निराशा तथा हीनता की भावना उत्पन्न होने से उनकी मेधा शक्ति कुंठित हो जाती है। सेनगुप्ता ने बताया है कि महिलाओं को शिक्षा का महत्व राष्ट्रीय हित में इतना आवश्यक समझना कि इन्हें विभिन्न प्रकारों की सुविधा प्रदान करने की व्यवस्था की गयी ताकि वे शिक्षा प्राप्त करके देश के विकास में अपनी भूमिका प्रदान करें। परन्तु बेरोजगारी की दशा उनकी मेधा शक्ति को निर्बल बना देती है।

4.राष्ट्रीय धन की बर्बादी :– शिक्षित महिलाओं के द्वारा काम करवाने के कारण उनकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर व्यय की गयी राष्ट्रीय धन की बर्बादी होती है। राष्ट्र को यह अधिकार है कि उनकी शिक्षा पर की गयी राष्ट्रीय धन के बदले समाज के प्रति उनकी अंशदान या योगदान की मांग करें। अतः प्रत्येक शिक्षित महिला को जो देश को सामाजिक एवं औद्योगिक विकास में अपना योगदान नहीं देती, वे राष्ट्रीय सम्पत्ति को बर्बाद करती है।

***एम.ए. समाजशास्त्र पटना विश्वविद्यालय, पटना नेट उत्तीर्ण– 2017 कमाल मंजिल, लालबाग पो0–महेन्द्रु, जिला– पटना– 6**

5.वैयक्तिक विघटन :– चूंकि महिला को पारम्परिक रूप से गृहणी समझा जाता रहा है उन्हें घर के बाहर नौकरी करने हेतु अयोग्य समझा जाता रहा है, लेकिन इधर वे शिक्षित होकर नौकरी में जाने हेतु मांग करती है तथा इच्छा भी रखती है परन्तु वह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहती है तो उनमें हीनता, उपेक्षा, तिरस्कार आदि की भावना का विकास होता है। वह परम्परागत मूल्यों के प्रति उदासीन हो जाती है एवं नये मूल्यों के आधार पर चलने का प्रयास करती हैं परन्तु उनमें बाधा उत्पन्न होने से वे विभिन्न प्रकार के मानसिक रोगों से ग्रस्त हो जाती हैं जिससे उनका वैयक्तिक विघटन प्रारम्भ होता है।

ललिता देवी ने लिखा है कि परिवार में महिलाओं के द्वारा धनोपार्जन करने पर रोकने से इसका प्रभाव संबंध प्रतिमान पर पड़ता है। पत्नी हमेशा पति से अपने को अलगाव महसूस करती है। फलस्वरूप एक ओर तो पत्नी में वैयक्तिक विघटन होने ही लगता है दूसरी ओर पति का भी वैयक्तिक विघटन प्रारंभ हो जाता है।

6.पारिवारिक विघटन :– रीता सिंहा ने अपने अध्ययन के आधार पर स्पष्ट किया है कि जो महिला संयुक्त परिवार में रहती हैं। उन्हें सबसे अधिक परम्परा तथा रूढ़ियों से सामना करना पड़ता है एवं बेरोजगार रहने पर मजबूर होना पड़ता है। फलस्वरूप आज अधिकांश शिक्षित महिलाएं संयुक्त परिवार से घबराती ही नहीं बल्कि कतराती भी है। इनका कहना है कि संयुक्त परिवार स्वतंत्रता में बाधा तो डालती ही है साथ ही कलह क्लेश की जड़ भी होती है। अतः वे अपने आपको संयुक्त परिवार से संबंध तोड़ लेती हैं। जो उनका विरोध करते हैं उनके प्रति पारम्परिक सहयोग की भावना में कमी आती है, जो कभी परिवार की स्थायित्व की केन्द्र बिन्दु मानी जाती रही है।

अनेजा ने यह पाया है कि पुरुषवाद से सम्बन्धित पक्षपातपूर्ण धारणा महिलाओं को नौकरी में जाने हेतु बाधा उत्पन्न करते हैं। सोनी ने बतायी है कि जो महिलाएं उच्च उत्तरदायित्व के पदों पर कार्यरत हैं उन्हें यह अनुभव होता है कि उनका 'नारी' होना उनके विकास एवं उन्नति में बहुत अधिक बाधक है। अगर वे अत्यन्त योग्य एवं कुशल हैं तो भी उनकी अधीनता से कार्य करने वाले पुरुष इसे अपने पौरुष का अपमान समझते हैं।

कहने का तात्पर्य है कि जब किसी शिक्षित पत्नी को नौकरी पर जाने से रोका जाता है तो इससे पति–पत्नी में वैचारिक मतभेद हो जाता है, उनमें परस्पर तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है एवं वे एक दूसरे से कटा–कटा अनुभव करने लगती है। इसका अन्तिम परिणाम अलगाव या तलाक के रूप में सामने आती है जो परिवार को विघटित करती है।

इस प्रकार बेरोजगारी के कारण एक ओर तो परिवार का विघटन होता है तो दूसरी ओर समाज का भी विघटन होता है।

निर्धनता में वृद्धि – बेकारी का निर्धनता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है परन्तु शिक्षित महिलाओं को जब नौकरी में जाने हेतु रोका जाता है तो विपरीत तथ्य सामने आते हैं। अनेक अध्ययन से पता चला है कि महिलाएं अपनी आर्थिक स्थिति को पूरा करने हेतु व्यवसाय में जाना चाहती है परन्तु जब उन्हें पति रोकते हैं तो वह असंतुलित रूप से अपने धनों का उपयोग करने लगती है। इस क्रम में वे अपने सौन्दर्य प्रसाधन पर अधिक खर्च करती है जिससे परिवार का आर्थिक संतुलन बिगड़ जाता है। फिल्मी पुरूषों की अपनी प्रतिष्ठा तथा समाज के परम्परा के भय के कारण वे अपनी पत्नी को विभिन्न प्रकारों के व्यवसायों में जाने से रोकते हैं। फलस्वरूप उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय ही होती चली जाती है।

ए.के. भट्टाचार्य ने इस स्थिति के बारे में निष्कर्ष दिया है कि जो महिला अशिक्षित होती है एवं व्यवसाय में नहीं जाना चाहती है, उनके परिवार में ऐसी स्थिति नहीं आती, क्योंकि वे आर्थिक रूप से अपने पति पर ही निर्भर रहती हैं परन्तु जो स्त्री शिक्षित होती है एवं काम करने में इच्छुक होती हैं, इस प्रकार का माहौल तैयार करती है जिससे बाध्य होकर पति उन्हें नौकरी पर जाने हेतु आज्ञा दे देते। जो पति ऐसा नहीं करते, उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय ही होती चली जाती है। वस्तुतः शिक्षित महिलाओं में बेरोजगारी एक समस्या के रूप में विद्यमान है। इसके साथ–साथ जो कामकाजी महिलाएं हैं उन्हें भी काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। शिक्षित महिलाओं में व्याप्त बेरोजगारी उनके लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए एक समस्या बन चुकी है।

सन्दर्भ सूची

1. Anega, R.K. (1973) : Open the Doors Opportunity occurring in P.Kapur's Book. The Changing Status of working women in India, Vikas Dehle (1974).
2. Arora, K.K. Bhattacharya & others (1963) : Women and Career, Tata Institute of Social Science, Bombay.
3. Blang, M. (1969) : The causes of graduate unemployment in India, Penguin Press, London.
4. Bhattacharya, A.K. (1982) : The problem of educated unemployment in India, Meenakshi Prakashan, New Delhi.
5. Soseruf, E. (1970) : Women's Role in Economic Development, George Allen & Unwin Ltd. London.
6. Cormach, I.E. (1961): The Hindu Women, Asia Publishing House, Bombay.
7. Dholakia, J. (1970): Some aspect of unemployment among the educated in Gujrat, Arthe vikas Vol. 6(2).
8. Das, N. (1980): Unemployment, Full employment and India, Meenakshi Prakashan, New Delhi.